मातेश्वरी जी की अविस्मरणीय यादें...

जो मम्मा से मिला, वो बाबा का हो गया

ब्र.कु. चक्रधारी

मम्मा का जीवन बहुत आकर्षक और आत्मिक चुम्बकीय था। उनको जो भी देखता था वह अपना महसूस करता था, अपनी माँ अनुभव करता था अथवा उनमें देवी माँ का दर्शन पाता था। दिल्ली, कमला नगर में एक माता आती थी, उसका पति अच्छा था लेकिन लोगों की भड़काने वाली बातों में आकर वह अपनी पत्नी को आश्रम पर जाने नहीं देता था। वह माता चुपके-चुपके आती थी। जब उसको पता पड़ा कि मम्मा सेवाकेन्द्र पर आ रही हैं, तो उसने अपने पति से कहा, देखो मातेश्वरी जी आ रही हैं, वह अम्बा है, देवी है, उनसे आप एक बार मिलो, उनका दर्शन करो। अगर उनसे मिलने के बाद भी आपको लगे कि इस संस्था में जाना अच्छा नहीं है, तो मैं वहाँ जाना बन्द कर दूंगी। ऐसे कहकर वो अपने पति को लेकर आयी। मम्मा उन दोनों से पर्सनल मिली। पाँच मिनट दोनों को मीठी दृष्टि दी और मधुर महावाक्य सुनाये। मम्मा का दर्शन पाकर तथा महावाक्य सुनकर वह व्यक्ति गद्गद् हो रहा था। उससे उसकी पत्नी ने कहा, देखिये, जहाँ हमारा घर है, वहाँ एक सेवाकेन्द्र है। वहाँ मम्मा को आने का निमंत्रण दे दीजिए। हमें भी लाभ होगा और वहाँ रहने वालों को भी लाभ होगा। उसके पति ने तुरन्त मम्मा से कहा, मम्मा, आप हमारा निमंत्रण स्वीकार कीजिये, उस सेवाकेन्द्र पर हम आपके लिए सब प्रबन्ध करेंगे। मम्मा ने बड़े प्यार से उनका निमंत्रण स्वीकार किया। आठ दिन के लिए उन्होंने बहुत सुन्दर प्रबन्ध किये। आठ दिन तक वह व्यक्ति सर्व प्रथम आकर मम्मा के सामने क्लास में बैठता था, वह यहाँ तक सोचता था कि मम्मा को हमने निमंत्रण देकर बुलाया है, इसलिए सेवाकेन्द्र पर कोई चीज़ की कमी नहीं होनी चाहिए। इसके बाद वह इतना पक्का बाबा का विद्यार्थी बना कि जब उसने नया मकान बनाया तो उनका परिवार नीचे रहा और ऊपर का मकान सेवाकेन्द्र के लिए दे दिया। इस प्रकार, मम्मा की पालना जिसने भी ली वह बाबा का वारिस बच्चा बन गया।

नाउम्मीदवार में उम्मीद जगाकर आगे बढ़ाया

दादी कमलमणि

बड़े से बड़ा कार्य भी सहज अनुभव कराया

मैं गुड़गांव सेवाकेन्द्र पर रहती थी। मम्मा ने मुझको कहा, मैं दो दिन के लिए गुड़गांव सेवाकेन्द्र पर आऊंगी। यह बात सुनकर मुझे खुशी तो हुई, लेकिन साथ-साथ मैंने मम्मा को कहा, मम्मा, मैं तो छोटी हूँ, मुझे इतनी बड़ी तैयारी करना तो नहीं आयेगा। तो मम्मा ने कहा, 'देखो कमलमणि, तुम छोटी हो परन्तु छोटी होकर मम्मा को बुलाया, यह बात सुनकर सभी बहनें तो तुम्हारी प्रशंसा करेंगी। इसलिए तुम यह कार्य करने में ना नहीं करो। बड़ी दीदी (मनमोहिनी जी) तुमको मदद देगी।' ऐसे मम्मा ने मुझे बड़ी हिम्मत दिलायी और गुड़गांव सेवाकेन्द्र पर दो दिन मम्मा रही, बहुत बड़ा कार्य होते भी सहज हो गया। दो दिन तक मम्मा ने खूब सेवा की। सवेरे का क्लास कराना, बाद में भाई-बहनों से व्यक्तिगत रूप में मिलना आदि से हमें बड़ा अच्छा अनुभव हुआ कि मम्मा कैसे सर्विस करती हैं, हमको भी ऐसे ही करनी है।

कमी का कमाल में परिवर्तन

मम्मा को हमने कहा कि एक भाई (जैन भाई) की कोई बात न मानी जाये तो वह बहुत असन्तुष्ट होता है। तो मम्मा ने कहा कि 'देखो – जैसे कोई को प्यास लगे तो उसको पानी ना देकर 36 प्रकार का भोजन दो तो राज़ी होगा? इसलिए इस आत्मा के संस्कार को देख उसकी बात मानकर सन्तुष्ट करना है, फिर उस भाई के संस्कार को देखकर मम्मा ने उसका नाम रखा 'ओके'। उस भाई को बहुत स्नेह हो गया। ओके नाम रखने से वो ओके हो गया अर्थात् उसका परिवर्तन हो गया। मम्मा के बोल, जैन भाई के लिए वरदान बन गये। इस प्रकार, मम्मा वरदानी थी, त्रिकालदर्शी थी और विश्व की समस्त आत्माओं की भलाई करने वाली विश्व-कल्याणी थी।

मम्मा ने मनुष्य जीवन के महान लक्ष्य की जागृति दिलाई

ब्र.कु. नलिनी,घाटकोपर

भाग्यविधात्री जगदम्बा, जिसकी महिमा अपरम्पार है, बेजोड़ है, बेमिसाल है, वह स्वयं सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा की पहचान है। सर्व गुणों से अलंकृत, दिव्य शक्तियों से सम्पन्न, सर्व की प्यास बुझाने वाली, सर्व की मनोकामनायें पूर्ण करने वाली, ईश्वरप्रदत्त सर्व गुणों की शाश्वत, निर्मल, स्वच्छ, शीतल, पवित्र, शांत, गम्भीर सिद्धिस्वरूपा है। ऐसी प्राण-प्यारी मातेश्वरी सरस्वती का गायन, वर्णन स्वयं परमपिता परमात्मा ने ब्रह्मा के मुखकमल द्वारा किया है।

ऐसी वरदानी मम्मा से जब मैं अपनी लौकिक माँ के साथ पहली बार मिलने गई। तब कुछ ही क्षणों में मधुर, मंजुल स्वर कानों में पड़ा और मैं हर मधुर स्वर का जागृत दशा की बेहोशी में जवाब देती गयी और आखिर जब यह प्रश्न उस मुख कमल से निकला, 'तुम्हारे जीवन का लक्ष्य क्या है?' जवाब था 'खाना, पीना और मौज करना।' मीठी माँ का मीठी प्यार भरी दृष्टि से देखना, मंद-मंद मुस्कराना और इतने में क्या हुआ? कमरे में ट्यूब लाइट के ऊपर एक चिड़िया का घोंसला था उसमें छोटा सा, नन्हा सा, प्यारा सा, कोमल सा बच्चा चोंच खोल इंतज़ार में निहार रहा था। उतने में उसकी माँ ने खिड़की से प्रवेश किया और घोंसले में स्थित उस बच्चे के खुले हुए मुख में उसका भोजन दाने के रूप में डालने लगी। कितना भव्य दृश्य था! दुनिया के सर्व सम्बन्धों में से सर्वोत्तम सम्बन्ध होता है - माँ और बच्चे का। फिर मंजुल मधुर स्वर में प्यार भरा प्रश्न, 'देख रही हो?' 'हाँ जी!' 'क्या देखा?' 'माँ अपने बच्चे को खिला रही है!' 'सोचो! तुम्हारे में और उसमें क्या फर्क है? ईश्वर का वरदान मनुष्य जीवन को मिला है, लेकिन वही बुद्धि-प्रदत्त मनुष्य ने भी किया अर्थात् बड़े हुए, बाल बच्चे पैदा किये, उनकी पालना हेतु खिलाना-पिलाना किया - वह तो पशु-पक्षी भी करते हैं। यदि मनुष्य होकर हमने भी यही किया तो हमारे और उनमें अन्तर क्या रहा? मनुष्य प्राणी फिर उत्तम क्यों? मनुष्य जीवन की श्रेष्ठता क्या? मनुष्य जीवन का महत्व क्यों?' यह सुनाते ही प्राण प्यारी माँ ने अपनी सर्व प्राप्ति व सर्व मनोकामनायें पूर्ण करने वाली गोद में ममता की थपथपी लगायी। रूहानी प्यार का हाथ फिराया और फिर जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिए, मनुष्य जीवन कैसे हीरे तुल्य है, हम अपना जीवन देवता जैसा दिव्य, श्रेष्ठ व आदर्श कैसे बनायें – उस विषय पर करीबन एक घंटा समझाया और अज्ञानता की गहरी निद्रा में जो बुद्धि का नेत्र बन्द था उसे खोला। अपनी मन्द, मधुर, शक्तिवर्धक मुस्कराहट द्वारा ऐसी शक्तियाँ भर दीं जिससे जीवन को सही दिशा मिली, जीवन को सही मंज़िल मिली। आज भी यह जीवन माँ की पालना की, ममता की, ज्ञान-गुण शक्तियों की अंगुली पकड़े मंज़िल की ओर आगे बढ़ता चला जा रहा है।

मम्मा नहीं, बल्कि दिव्यता की मूर्ति

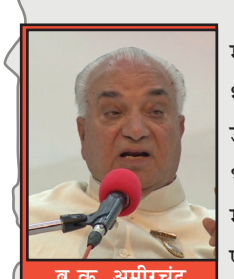
ब्र.कु. अमीरचंद

मम्मा कुमारी थी, परंतु उनको जो भी देखता था, उसे माँ का, देवी का, फरिश्ते का दर्शन होता था। देहभान होता ही नहीं था, जैसे छोटा बच्चा अपनी माँ की गोद में सहज रूप से चला जाता है, वैसे ही ब्रह्मा-वत्स मातेश्वरी जी की गोद में चले जाते थे।

मातेश्वरी जी में परखने की शक्ति बहुत थी। जब मैं उनसे मधुबन में पहली बार मिला तो मिलते ही मातेश्वरी जी ने कहा कि यह तो ज्ञानी तू बच्चा है। उससे पहले मैं ध्यान में जाता था, खेल-पाल करता था, भविष्य नज़ारे देखता था। लेकिन जब मातेश्वरी जी से मिलकर वापस करनाल गया तो मेरा वो ध्यान का पार्ट खत्म हो गया। इस प्रकार, मम्मा के बोल मेरे लिए वरदान भी बन गये।

मातेश्वरी जी में निमित्त भाव सम्पूर्ण रूप में था। वे सदा कहती थीं कि यह शिव बाबा का कार्य है, वही करन-करवानहार है। हम तो सिर्फ निमित्त हैं, सब कुछ बाबा ही करते हैं। मम्मा का यह गुण मैंने भी अपनाने की कोशिश की है। इस प्रकार, हमने मम्मा को सदा लाइट (निश्चिंत) ही देखा।

मुम्बई में मातेश्वरी जी से मेरी अंतिम मुलाकात में मातेश्वरी जी की तबीयत साथ न देने के कारण उन्होंने मुझे कुछ बोला नहीं लेकिन उस समय भी उनका चेहरा, उनकी दृष्टि, मस्तिष्क पर उनका तेज उतना ही शक्तिशाली था जितना पहले था। उनके स्नेह, स्वरूप और व्यवहार में लेशमात्र भी अंतर नहीं था। मुझे स्पष्ट महसूस हुआ कि वे प्रकृतिजीत हैं।